स्वस्थ मन! **स्वस्थ तन!**

काउन्सेलिंग से तन-मन स्वस्थ

बेचैन मन है, बेचैन दिल है
बेचैन है सारा संसार,
खुशनुमा स्वस्थ जिंदगी जीने का सहारा
काउन्सेलिंग है

अपने आयुर्वेदीय ग्रंथों में लिखा है कि, जिसका मन स्वस्थ, उसका तन भी स्वस्थ है। वर्तमान समय व्यक्ति का जीवन मुश्किल सवालों से भरा है जैसे कि, व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, प्रशासनिक, नौकरी-धंधे आदि की अनेकानेक समस्याओं के कारण दुर्व्यसन, चिंता, डर, पराज्य, त्रस्तता, आत्महीनता, भूल्लकडपन, शंका, चिडचिडापन, मनमुटाव, बेचैनी, तनाव, उदासी, तंद्रा, रोना, सदमा, जुनून, अनिद्रा आदि का शिकार हो जाता है।

इस भयंकर मानसिक संकट के संघर्ष से सहज ही मुक्ति पाने की विधि है: मानसिक संघर्षों का सूक्ष्म यथार्थ विश्लेषण कर उसका सम्पूर्ण यथार्थ कारण जानकर, मानसिक परामर्ष या काउन्सेलिंग की मदद काउन्सेलर से लेकर सारे संघर्षों से मुक्त होने के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण युक्त रवैया अपनाने का सुझाव काउन्सेलर से प्राप्त कर नया जीवन, नया उमंग-उत्साह, नई उम्मीदें, नई सकारात्मक समर्थ सोच, स्व-परिवर्तन आदि से जीवन फिर से खुशनुमा, हराभरा बन जाता है। काउन्सेलिंग द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में मानसिक संतुलन की सही उर्जा धारण कर जीवन को सही दिशा में ले जाता है। मन स्वस्थ होने से तन भी स्वस्थ बन जाता है।

हम आपके सच्चे-सच्चे मित्र है, गभराईए नहीं, आप सम्पूर्ण निश्चिंत हो जाईये। हम आपकी सर्व समस्याओं का सम्पूर्ण समाधान करने आपकी सेवा में है। हमारा सम्पर्क करने से आपके मन की भावनाओं को सूकून मिलेगा। हमने सात (7) साल में 7230 मानसिक समस्याओं से ग्रसितों को काउन्सेलिंग द्वारा मन की परेशानियों से मुक्त किया है।

आप फोन, विडियों काउन्सेलिंग, चेटींग, पत्र, जी-मेईल, इन्टरनेट, रुबरू आदि के द्वारा हम से सम्पर्क कर काउन्सेलिंग की सुविधा ले सकते हैं।

भ्राता सुधाकर दवे

मेडिको सोशल वर्कर, सायको एनालिस्ट और काउन्सेलर

मोबाईल: 09462885945

ई-मेल: sdave591@gmail.com

पता: जी.वी.मोदी हेल्थ केअर सेंटर, शांतिवन के गेट नं. 6 के पास,
आबू रोड-307510 (राजस्थान), भारत।

अनुभव

डीप्रेशन, चिंता, तनाव, अनिंद्रा, अकेलापन से मुक्ति

मैं नैनवी राठौर, रूरल एग्रीकल्चर एक्सटेन्शन ऑफिसर, गर्वन्मेंट ऑफ छत्तीसगढ़ में हूँ। मैंने जी.वी. मोदी हेल्थ केअर सेंटर, आबूरोड़ में अपने मन का चेक अप करवाया। मैं डीप्रेशन, तनाव, चिंता, अनिद्रा, अकेलापन का शिकार और कुछ निजि कारणों से, परेशान हो चुकी थी। मैंने ऐलोपैथी, आर्युवेदी, होम्योपैथी कई दवाईयों ली, कुछ फायदा नहीं हुआ। मेरी बिमारी का समाधन नहीं हुआ। भ्राता सुधाकर दवे जी, मेडिको सोशल वर्कर, सायको एनालिस्ट, सायको थेरापीस्ट को अपनी समस्या को लेकर मिली। मैं जल्दी में थी इसलिये मैं सिर्फ आधा घंटा ही मिल पाई और अपनी समस्या उन्हें सुनाई। दवे सर जी से मिलने के बाद मैं बहुत ही रिलेक्स हो गई। दूसरे दिन जब मैं सर से मिली तो उन्होंने अपना अमूल्य समय देकर साढ़े चार घंटे मेरा काउन्सलिंग किया। मुझे परामर्श दिया कि जीवन क्या हैं? जीवन में क्या लक्ष्य होना चाहिए? जीवन के प्रति हमारा नजरिया क्या होना चाहिए? जीवन में जो-जो परिस्थितियाँ आती है उसका कैसे मुकाबला करना चाहिए? आदि-आदि काउन्सलिंग किया। उसके बाद से अब मैं बहुत ही रीलेक्स फील कर रही हूँ। काउन्सलिंग से मेरा सशक्तिकरण हुआ। अब मैं उर्जावान महसूस कर रहीं हूँ। मेरी खोई हुई आशाऐं लौट आई हैं, मेरा नजरिया सकारात्मक बनने के कारण मैं खुशी, सुख-शांति का अनुभव कर रही हूँ। उसके बाद से नींद भी अच्छी आ रही हैं। मेरा डीप्रेशन, अकेलापन, तनाव और मेरी चिंता बिल्कुल ही भस्म हो चूकी हैं।

धन्यवाद सुधाकर सर का, उन्होंने ही मुझे इनसे मुक्ति दिलाई! काउन्सलिंग से चमत्कार हुआ; अब मुझे लगभग एक साल से कोई भी दवाई लेने की जरूरत ही नहीं हुई हैं।

पिता और पुत्र के बीच पीढ़ी का अंतर

मेरा नाम माया उन्नी नारायणन, हैदराबाद का हूँ। मैं बी.टेक., एम.टेक, एम.काम पढ़ा हूँ। मैं एबीवीपी (स्टार) न्यूज चैनल, मुंबई में फाईनेन्स मेनेजर हूँ। मैं अपनी घरेलू समस्या का समाधान पाने सुधाकर सर के पास काउन्सलिंग के लिए आया। वास्तव में मेरे पिताजी और मेरे बीच गलतफहमी हुई थी। मेरे मन में मेरे पिताजी के बारे में नकारात्मक भाव पैदा हो गया था। इस कारण सुधाकर सर के पास आना हुआ। मेरी समस्या को जानकर मुझे और मेरे पिताजी को अलग-अलग समझाया। इसके बाद से हम दोनों के बीच एक दूसरे को समझने की शक्ति बढ़ गई हैं।

दूसरा, एक नई ऊँचाई पर हमारे संबधों को आयाम मिला हैं, इस का पुरा श्रेय सुधाकर सर को है। कोई भी मुद्दे पर किसी भी समय के लिए मैं काउनसिलिंग के लिए समर्थन करता हूँ। मुझे लगता है, वह बहुत ही आपको मदद देगा। सुधाकर सर, कोई भी समस्या को बहुत अच्छी तरह पकड़ते है और जल्दी समझ लेते हैं। आपको क्या समस्या है? मुझे लगता है आपकी समस्या के बारे में आपको वह सुन्दर मार्गदर्शन देंगे। आपको किसी भी प्रकार की समस्या हो, समस्या से परेशन हो, मैं ईमानदारी से उन्हों का समर्थन करता हूँ।

पिता का अनुभव

मैं भेल–भारत हेवी ईलेक्ट्रीकल्स लिमिटेड, हैद्राबाद में मास्टर टेक्नीशियन हूँ। मेरा लड़का माया, मुझ से डिस्टर्ब हुआ है, इस लिए सुधाकर दवे, काउन्सलर के पास मुझे काउन्सलिंग के लिए लेके आया। मेरे लकड़े को क्या प्रोब्लम है? उसे तुरंत ही सुधाकर सर ने पहचान लिया और बहुत ही हेल्पफुल (सहायक) काउन्सलिंग किया। मेरा भी काउन्सलिंग किया कि मुझे अपने लड़के के साथ में कैसे व्यवहार करना है, रहना है। मैं सुधाकर दवे का बहुत बहुत आभारी हूँ।

सत्य अनुभव

काउन्सलिंग से सर्व मानसिक विघ्नों से मुक्ति एवं भव्य बाबा भवन की स्थापना

– बी.के. अनुराधा

मेरा नाम बी.के. अनुराधा है। बिहार में एक गाँव में झोंपड़ी सें महल बना कर मेरे बाबा ने कमाल कर दिया। वाह मेरा मीठा प्यारा बाबा! बाबा तेरा लाख-लाख शुक्रिया। आपके मन में प्रश्न होगा कैसे? इस कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगयमुग पर जो असम्भव है, वह संभव है। अब पढ़िये मेरी जीवन कहानी –

मेरा जन्म एक किसान परिवार में हुआ है। हम दो बहनें और दो भाई हैं। मैं घर में सबसे छोटी हूँ। मैं पढ़ने में बहुत ही तेज थी, किन्तु परिवार की परिस्थिति ने मुझे मजबूर बना दिया। मैंने पढ़ाई छोड़ दी, अपने पिताजी को खेती में मदद करने लगी। मैं अपने पिताजी के साथ में नजदीक गाँव में मेरे मामा रहते हैं, उन्हों के घर में ब्रह्माकुमारी गीता पाठशाला चलती है। उन्हों के घर में आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र, कल्प-वृक्ष मनुष्य जीवन का लक्ष्य, राजयोग आदि के चित्र लगे थे, जब भी जाते तो हमेशा मैं चित्रों देखती रहती थी। चित्र देख मुझे कुछ समझ में नहीं आता था। मैं घण्टों तक एक-एक चित्रों को देखती ही रहती थी। मेरे मामा ने मुझे एक दिन पूछा – मेरे साथ ब्रह्माकुमारी के बड़े सेंटर पर चलोगी, मैं छोटी बच्ची थी, मैं कुछ भी समझी नहीं। मैं अपने मामा के साथ उस दिन बड़ें सेन्टर पर गई। वहाँ की बड़ी बहन जी ने मुझे प्यार से पूछा आप थोड़े दिन यहाँ रुकोगी। मैंने हाँ कही और रुक गई। उस घड़ी से आज की घड़ी मैं सदा बाबा की रही और अन्त तक रहूँगी। 6 वर्ष उस सेन्टर पर रही। अचानक एक दिन मेरी बड़ी बहन जी (मुख्य सेन्टर इंचार्ज) ने पूछा – आप नया सेन्टर संभालोगी? हमारी बड़ी बहन जी से जो-जो आदेश मिले, हर आदेश का मैंने बाबा का आदेश है, ऐसा समझ कर पालन किया है। मैंने मुख्य सेन्टर पर समर्पित होते ही मन ही मन में गाँठ बाँध ली थी कि मैं शिव प्यारे भगवान की सजनी हूँ, मेरा मीठा प्यारा शिव साजन मुझे जहाँ बिठावे, जो खिलावे, जो पिलावे, जो पहनावे, जहाँ भेजे, मुझे जी हजूर, ही कहना है। हाँ माना आस्तिक और ना माना नास्तिक।

मुख्य सेन्टर पर रहकर और टीचर्स ट्रेनिंग लेकर सेन्टर चलाने का काफी अनुभव मैंने प्राप्त किया। मैं अपनी बड़ी बहन जी के साथ अपने नए सेन्टर पर पहुँची, जिसे संभालने के निमित्त मुझे बनाया था।

मुझे लगभग झोंपड़ी-सा सेन्टर संभालने के लिए मिला था। जो मैंने पूरे 10 साल सुचारू रूप से संभाला। मैं रोज मन ही मन में बाबा से दुआ माँगती थी कि मुझे इस ही स्थान पर बाबा का बड़ा भवन बनाना ही है। मुझे यहाँ बाबा का नाम बाला करके दिखाना ही है।

वैसे सेन्टर चलाना कोई मासी का घर नहीं है। देखो, आप अपने छोटे घर में ज्यादा से ज्यादा 6-8 परिवार के लोगों को संभालते होंगे। यह है मेरे बाबा का बेहद का घर, ईश्वरीय परिवार में आपसे हम 20 गुना ज्यादा लोगों को संभालते हैं। सोचो? हमारे बेहद के बड़े परिवार में बेहद की अनेक बातें, बेहद के अनेक प्रश्न, बेहद की अचानक अनेक परिस्थितियाँ आदि हर दिन हमारे सामने जवाब माँगने के लिए खड़ी हैं, इनका जवाब हमें बाबा की मुरली से, योग से एवं अपने अनुभवों के खजानों से मिल जाता है परन्तु कई प्रश्नों एंव कई बातों का उत्तर हमें नहीं मिल पाता है। क्योंकि उस समय अनेक प्रश्नों के कारण हमारा मन और बुद्धि दोनों ही दुविधा में होने के कारण हम अपने निराकार शिव बाबा या अव्यक्त बापदादा से योग लगाते हैं। बाबा हमारे मन के सर्व प्रश्नों का उत्तर हम बच्चों को टचिंग के द्वारा देते हैं परन्तु हमारा मन-बुद्धि उलझन या दुविधा में होने के कारण बाबा की सारी टचिंग को हम कैच नहीं कर पाते हैं। इसलिए मैं मन ही मन सोच रही थी, मेरे

सारे प्रश्नों का उत्तर मुझे कौन दे? चूँकि कई बातें या प्रश्न न हम अपनों को या न औरों को सुना सकते हैं, सिर्फ बाबा को ही हम सुनाते हैं।

हर साल शान्तिवन में हम सब सेन्टर इंचार्ज बहनों की शान्तिवन में योग-भट्ठी होती हैं। मैं अगस्त, 2011 में योग-तपस्या भट्ठी में आई थी। उस समय मैं बहुत ही उलझन में थी, अपनी सारी समस्याओं को लेकर कि किससे इसका समाधान मुझे मिले। वर्तमान समय हमारी बड़ें बहनें, दादियाँ, दीदीयाँ आदि पर सेवा की इतनी बड़ी जिम्मेवारियाँ हैं, जो हम छोटों की समस्याएँ सुनने के लिए समय भी नहीं है। इसलिए हम स्वयं ही अपनी सारी समस्या सुलझा लेते हैं। वैसे हमारी योग-तपस्या भट्ठी में जिन टीचर्स बहनों के मन में कोई प्रश्न हैं तो पूछकर उसका समाधान दिया जाता है। परन्तु प्रश्न वैसे का वैसा मन में बना ही रहता है।

मैं अमृतवेले शान्तिवन के तपस्याधाम में योग करने गई। मैंने बाबा से रूहरूहान की, बाबा को अपनी सारी समस्याएँ सुना दी। हमारी ईश्वरीय दिनचर्या के अनुसार हम सुबह 6 बजे से 7 बजे संगठन में योग क्लास, 7 बजे से 8 बजे संगठित रूप में ईश्वरीय ज्ञान मुरली क्लास फिर नाश्ते पर हम सब टीचर्स बहनें इकट्ठी होती हैं। नाश्ता करते समय बातों बातों में हमारे में से एक टीच बहन बोली – जी.वी.मोदी हेल्थ केअर सेन्टर, शान्तिवन के गेट नम्बर 6 के बाहर बी.के. सुधाकर भाई, काउन्सलर समर्पित रूप से काउनसिंग की सेवाएँ दे रहे हैं। मैं भी सुन रही थी, मैंने पूछा – काउन्सलिंग माना क्या? टीचर बहन बोली – काउन्सलिंग माना परामर्श, सलाह या समझाना। जो कुछभी आपकी मानसिक परेशानियों का कारण या समस्याएँ या बातें हैं, जिसका आपके पास निवारण या समाधान नहीं है, काउन्सलर के पास आपकी समस्या का सरल और उचित समाधान है। काउन्सलर का काम है आपको सच्ची-सच्ची, सकारात्मक बाबा की श्रीमत अनुसार ही सलाह देकर, आपको मानसिक परेशानियें से मुक्ति दिलाना। मेरे पास वाली बहन ने पूछा – यदि अपनी सारी समस्या और बातें काउन्सलर ने किसी को बता दी तो? टीचर बहन ने कहा – मेडिकल व्यवसाय में एक की बात दूसरे को या तीसरे को कभी सुनाई नहीं जाती है। यदि उसने सुनाई तो किसी का भी उस पर से भरोसा उठ जायेगा। इसलिए ऐसी बातें हमेशा गुप्त रखी जाती हैं। भारत में काउन्सलिंग का प्रचार-प्रसार नहीं है। भारत देश में काउन्सलिंग के बारे में जागृति भी नहीं है। वर्तमान समय समस्याओं का युग, दु:ख और अशान्ति का युग है, सर्व के लिए। अपने देश में समझते हैं कि यदि किसी को कोई मनोरोग है, उसका मनोरोग चिकित्सक का इलाज चल रहा है। मनोरोग चिकित्सक को उचित लगता है तब उसके कहने अनुसार मनोरोगी को मेडिकल काउन्सलर के पास काउन्सलिंग के लिए भेजा जाता है।

दूसरी टीचर बहन ने पूछा – परदेश में क्या है? टीचर बहन ने कहा – परेदश में गली-गली में काउन्सलिंग सेन्टर्स हैं। मैंने पूछा – गली-गली में? टीचर बहन बोली – हाँ। बच्चों का काउन्सलिंग सेन्टर, युवाओं के लिए काउन्सलिंग सेन्टर्स, महिलाओं के लिए काउन्सलिंग सेन्टर्स, वृद्धों के लिए काउन्सलिंग सेन्टर्स, नशामुक्ति के लिए काउन्सलिंग सेन्टर्स, पति-पत्नी की समस्या के लिए काउन्सलिंग सेन्टर्स, स्पोर्टस के लिए काउन्सलिंग सेन्टर्स, डिप्रेशन के लिए काउन्सलिंग सेन्टर्स, तनाव के लिए काउन्सलिंग सेन्टर्स, मेडिकल काउन्सलिंग सेन्टर्स, वृद्धों की संभाल करने वालों के लिए काउन्सलिंग सेन्टर्स आदि-आदि।

मैंने सोचा, मैं बाबा की टचिंग को कैच नहीं कर पाती हूँ। इसलिए बाबा ने मुझे इस टीचर बहन के द्वारा काउन्सलर को मिलने के लिए इशारा दे रहे हैं। मैंने मन ही मन में मीठे प्यारे बाबा और टीचर बहन को थैंक्स दिया।

मैं नाश्ता करने के बाद तुरन्त ही जी.वी.मोदी हेल्थ केअर सेन्टर, शान्तिवन के पास बी.के. सुधाकर भाई, काउन्सलर को मिली। मैं परेशानियों के कारण मन से घबराई हुई थी, डर, चिन्ता, टैंशन, डिप्रेशन आदि के मारे दुविधा में थी। बी.के. सुधाकर भाई से मेरी पहली मुलाकात थी। उनसे मिलते ही सबसे पहले मुझे 3 मिनट योग कराया। बाद में मुझे बड़ी विनम्रता से पूछा – दीदी जी, मैं आपकी कोई मदद कर सकता हूँ? आपके मन में कोई भी परेशानियाँ, प्रश्न,

बातें, समस्याएँ हों, आप निश्चिन्त मन से मुझे बता सकते हो,, आपकी सारी बातें सम्पूर्णत: गुप्त रहेंगी। बाबा ने मुझे निमित्त बनाया है सर्व की मानसिक परेशानियों से मुक्त करने के लिए। क्योंकि वर्तमान समय इस ही सेवा की अति आवश्यकता है और हर दिन इस सेवा की आवश्यकता बढ़ रही है। उन्होंने मुझे विश्वास दिलाया, इस कारण मुझमें कुछ हिम्मत आई और निश्चिन्त मन से अपनी सारी परेशानियाँ आदि दिल खोल कर सुना दी। दूसरा मुझे यही विशेष चिन्ता लगी थी कि मैं अपनी इस झोंपड़ी में से निकल बाबा का बड1 भवन कैसे बनाऊँ? इसे बनाने में कौन-कौन-से विघ्न, कैसी-कैसी परिस्थितियाँ आदि आ सकती हैं और इसका क्या उपाय? क्या मैं सिर्फ बाबा के सहारे, फकीर की खाली जेब से बाबा का महल बना सकती हूँ? न मैं कोई पढ़ी-लिखी, न कोई भी बात का मुझे अनुभव है? ऐसी-ऐसी अनेक बातें मेरे सामने थी। मैं सुधाकर भाई से मिलकर सोच रही थी कि महिमा सारी बाबा की है कि बाबा ने कहाँ-कहाँ से कैसे अनमोल रत्न चुने हैं और बाबा ने अपनी विशेषता भर दी है। क्योंकि बाप है, करनकरावनहार। अपना कार्य दूसरों को निमित्त बना कर करा लेते हैं।

कई बाबा के सूक्ष्म इशारों को कैच या पकड़ने के लिए, परखने, समझने के लिए, सूक्ष्म, स्वच्छ बुद्धि की आवश्यकता है। इसकी कमी के कारण प्रश्नों का समाधान हम कर नहीं पाते, इसलिए साकार में तटस्थ काउन्सलर चाहिए।

मैंने अनुभव किया कि सुधाकर भाई में बेहद रहम, दया, करुणा और विश्व कल्याणकारी भाव है। तब ही लगातार 11 घण्टा, प्रात: 8.30 बजे से रात्रि 7.30 बजे तक, चार दिन काउन्सलिंग चलता रहा। हमारा दोपहर का भोजन भी छूट जाता था। मेरी हर समस्या,हर प्रश्न के, मेरे भाव-स्वभाव-संस्कार, मेरी मानसिक, शारीरिक शक्ति एवं बुद्धि की शक्ति को परख कर, माप कर समाधान दिया, मैं बहुत ही संतुष्ट हुई, खुश हुई। बाबा ने काउन्सलर द्वारा मेरे मन की सारी पुरानी बातें निकाल दी। जो मेरे मन में बहुत दिनों से घर करके बैठी थी। दिलाराम बाबा ने मेरे दिल की बातों का काउन्सलर द्वारा समाधान कर मेरे मन को बहुत क्लीन किया। कमाल है। मुझे ज्ञान की बातें लगातार 5 घण्टों तक सुना कर समझदार बनाया। मेरे अन्दर नैतिक हिम्मत, साहस भरा, कैसे सामना करना चाहिए, कैसे समाना चाहिए, कहाँ समेटना है, कब विस्तार करना है, कहाँ सामना करना और कहाँ नहीं करना है, कैसे परखना, कैसे निर्णय करना है आदि-आदि। नैतिक मूल्यों, मानवीय मूल्यों और आध्यात्मिक जागृति मुझमें लाकर, मुझे पूरा बदल डाला। जैसे बाबा का वरदान अपने जीवन में छप जाता है, वैसे काउन्सलिंग के द्वारा जो मुझे समझ मिली, मेरे में नैतिक जागृति आई, यह मेरे दिल में छप गई।

काउन्सलर ने काउन्सलिंग के चौथे और अन्तिम दिन योगाभ्यास के साथ-साथ दृढ़ प्रतिज्ञा करवा कर याद दिलाया – जो हो गया, अच्छा ही हुआ है, जो हो रहा है, बहुत अच्छा हो रहा है और जो होगा वह अच्छे से अच्छा ही होगा। संगमयुग है ही परम कल्याणकारी युग। जीवन में हानि-लाभ, जय-पराजय, सुख-दु:ख, मान-अपमान आदि सब कुछ मुझे सहन करना है। हर परिस्थिति, समस्या आदि को ईश्वरीय सौगात समझ कर स्वीकारना है। मैं आत्मा स्व राजा हूँ, मेरे साथ मेरी प्रजा है। मैं जो कर्म करूँगी, मुझे देख, मेरी प्रजा कर्म करेगी। मुझे निश्चय और नशा है कि सर्वशक्तिवान भगवान मेरा साथी है, मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ। सफलता मेरा जन्म-सिद्ध अधिकार है, मैं जीतने वाली हूँ, हारने वाली नहीं। मुझे सर्व के सामने आदर्श प्रस्तुत करना है। हम ब्राह्मणों की डिक्शनरी में असम्भव शब्द नहीं है। इस प्रतिज्ञा से जैसे मुझे नया जीवन मिला, मेरे रोमाँच खड़े हो गये। मुझमें अलौकिक जोश एवं होश का करण्ट लगा।

मैं अपने झोंपड़ी वाले सेन्टर में आई। बड़ी बहन जी को मिली। उन्हें सेन्टर दिखाने ले गई। मैंने कहा मेरा विचार है यहाँ पर बाबा का भव्य भवन बने और बाबा की प्रत्यक्षता हो। बड़ी बहन जी अपने साथ 2 बहनें और एक मुख्य भाई और आर्किटेक्ट को लेकर आई थीं। सारी जगह सबने अच्छी रीति से देख ली और माप ली। बहन जी ने मकान का प्लान बनाने का आदेश दे दिया। अंदाजित राशि 25-30 लाख तय हुई। मैं और मेरे साथ वाली बहन किराये पर पास वाले मकान में

रहने चले गये। यहाँ हजारों नहीं किन्तु लाखों रुपयों की बात थी। मैं सुधाकर भाई को अपना बड़ा भाई समझती थी। वैसे भी वरिष्ठ भाई हुए, उन्हें ज्ञान में 30 वर्ष से अधिक समय हुआ है। बचपन से ही ज्ञान में हैं। मैं समय प्रति समय सेंन्टर की प्रगति का सारा समाचार सुनाकर उन्हों से मदद लेती रहती थी। मैंने बताया बाबाका भवन बनाने का खर्च लगभग 25-30 लाख रुपया होगा। उन्होंने हिम्मत और साहस देते हुए कहा डरने की कोई बात ही नहीं है। मेरा दोस्त सहयोग देगा और उन्होंने अपने दोस्त से सहयोग दिलवाया।

यहाँ झोंपड़ी को तोड़ना आरम्भ हुआ, मैंने धनराशि इकट्ठा करना, रेत बेचने वाले, ईंट बेचने वाले, सीमेंट बेचने वाले, सरिया बेचने वाले, मिस्त्री, इलैक्ट्रिक का सामान बेचने वाले, प्लमबरिंग, कलर्स, हार्डवेयर का सामान बेचने वाले आदि-आदि की लिस्ट बना कर काम करना आरम्भ किया।

काउन्सलर ने बाबा का भवन बनाने में सर्व का दिल से सहयोग मिले, कार्य सुचारू रूप से निर्विघ्न चले। जब तक भवन निर्माण का कार्य सम्पन्न ना हो तब तक मुझे विशेष अमृतवेले 2 बजे से 5 बजे तक, सेंटर के सर्व स्टूडेन्ट्स संगठित रूप में, हर मुरली क्लास के 1 घण्टा पहले और बाद में एवं विशेष नुमा:शाम के समय 6.30 बजे से 7.30 बजे तक योग करने के लिए इशारा दिया। कहा सच्चे दिल पर साहब राजी है, बाबा सदा ही आपके साथ है, जो होगा बहुत ही अच्छा होगा, अब अपनी सारी जिम्मेवारियाँ बाप को सौंप दो। रात को सोने से पहले सारा पोतामेल बाप को सुना दो और अमृतवेले ईश्वरीय ज्ञान, स्नेह, सहयोग, मदद, शक्ति आदि लेकर विश्व को दान दो, साथ-साथ बाबा से सर्वशक्तियाँ लेकर अपने में धारण कर लो।

भवन बन रहा था उसके पास वाले मकान में हम रहते थे। मैंने अमृतवेले 2 बजे से 5 बजे तक योग करने का नियम बना लिया था। एक दिन रात को लगभग 1.30 बजे के आसपास भवन की ओर से आवाज सुनने में आई, मैं पानी पीने उठी थी। मैं अपनी खिड़की से झाँकने लगी। मैंने देखा कुछ चोर अपने भवन में से सीमेंट की बोरियाँ, मूल्यवान ग्रेनाईटस, भारी कीमत वाले स्टील के नल चुरा रहे थे। मैं घबरा गई, मैंने कहा बाबा मदद करो, मैं क्या करूँ? अचानक सुधाकर भाई को रात्रि में फोन किया कहा कि चोर आये हैं। इतनी रात में अकेली कहाँ जाऊँ? किसे बुलाऊँ? सुधाकर भाई ने कहा आप निश्चिन्त रहिये। मैं संभाल लूँगा। सुधाकर भाई ने तुरन्त ही यहाँ की पुलिस को फोन किया। कुछ ही मिनटों में पुलिस आई और चोरों को पकड़ कर ले गई।

करनकरावनहार बाबा की इतनी मदद कि बाप ने अनेकों को निमित्त बनाया, भाग्य बनाया और बाबा भवन का निर्माण कार्य पूरा हुआ। बाबा ने ऐसा अपना कार्य सम्पन्न किया कि मुझे हमारे अन्य सेन्टर्स या सब जोन को धनराशि आदि का सहयोग माँगने की जरूरत ही नहीं समझी। मैंने कहा माँगने से मरना भला। जो आज तक माँगा नहीं है तो अब क्यूँ माँगें। 31 लाख रुपये की धनराशि से बाबा का भवन तैयार हुआ। वाह मीठे प्यारे बाबा, वाह। बाबा आपने तो कमाल कर दिया। 18 जनवरी, 2013 के दिन भवन का बड़ी दीदी जी के कर-कमलों से उद्घाटन हुआ और सर्व ब्राह्मण परिवार का ब्रह्मा भोजन इकट्ठा हुआ। सारा ब्राह्मण परिवार, बड़ी दीदी, सर्व पधारे मेहमान भवन देखकर खुश हुए, संतुष्ट हुए, ढेर सारी बधाईयाँ मिली। हमने बाबा को अर्पण कर दी। फिर से बाबा का लाख-लाख शुक्रिया। जिन्होंने सहयोग दिया, उन्हों का भी शुक्रिया।

(मेरे जैसी अनेक बहनों को प्रेरणा मिले, बेहद सेवार्थ कृपया यह सत्य अनुभव प्रकाशित करें। धन्यवाद।)